"मेरी सुरीला" ..... के. के. कुञ्जिरामन, I B.Sc.

'माँ'

घर के सामने के बगीचे से आई आवाज़ सुनकर 'शहजा' रसोई घर से बाहर आयी। वह रोटी बना रही थी। लेकिन बेटी की आवाज़ सुनते वह वहाँ खडी रह नहीं सकती थी।

"क्या, बेटी 'सुरीला'" ?

'माँ इधर आओ' बेटी टूटी फूटी भाषा में बोली।

'सुरीला' बगीचे में बैठकर एक गुलाब का फूल देखती रहती थी। उसके साथ दो और छोटी लडकियाँ भी थीं। इन लडकियों ने सुरीला से कहा "पिताजी पुकारते हैं, हम जाती हैं।" इतना कहकर लडकियाँ दौड गयीं।

सुरीला माँ से पूछने लगी : "माँ मेरे पिताजी कहाँ है ? वे मुझे जलेबी दिया करते थे। आज वे आते क्यों नहीं माँ ?"

अपनी इकलौती बेटी की बात सुनकर शहजा का दिल टूट गया। सुरीला पाँच साल की बच्ची थी।

"पिताजी कल आयेंगे बेटी"; माँ ने स्वांतना दी। "आज ही क्यों नहीं आते माँ ? पिता कहाँ गये हैं; मुझसे कहो माँ"।

रोती हुई बेटी को गले से लगाकर शहजा कहने लगी। 'सुनो बेटी, 'हमारी उत्तर दिशा में; यहाँ से बहुत दूर; हमारे शत्रु रहते हैं। वे हैं चीन के लोग। वे हमपर हमला करने आते हैं और हमारे देशवासियों को मारते हैं। उनसे लडने केलिए पिता गये हैं।

"वे पिता को मार डालेंगे माँ" ?

"बेटी ! भगवान हमपर कृपा रखें।"

"पिता कब आयेंगे माँ"—सुरीला ने पूछा।

"कल ही आयेंगे बेटी, तब पिता तेरेलिए जलेबी लायेंगे।"—माँ बोली।

महीनें बीत गाये। एक दिन शहजा को एक चिट्ठी मिली। चिट्ठी पढकर शहजा और बेटी खुश हुई। सुरीला केलिए जलेबी भी भेजी थी।

सुरीला पिता की प्रतीक्षा में दिन काटने लगी। कभी कभी चिट्ठी मिलती थी। लेकिन फिर कुछ दिनों केलिए उसका कोई पता न लगा।

एक दिन शहजा अपनी बेटी के साथ बगीचे में बैठती थी.....सूरज बादलों से ओझल हो गया। .....एक आदमी ने आकर शहजा को एक खत दिया, खत मिलते ही उसको संतोष हुआ लेकिन खत पढते ही वह बेहोश पडी। बेटी अपनी माँ की हालत देखकर रोने लगी। आसपास के लोग दौड आये। कुछ समय होने पर उसको होश आया। उसका दुख अवर्णनीय था। खत देखकर लोगों ने बात समझी। वे उसको सान्त्वना देने लगे।

जब शहजा होश आने पर रोने लगी तब सुरीला आयी और माँ से पूछने लगी।

"माँ' तुम क्यों रोती हो ? कहो माँ क्या, पिता नहीं आयेंगे"

यह सुनते ही सुरीला की आँखें डबा-डबा आयी। वह नीचे गिर पडी। किसी भी प्रकार वह नहीं उठी। वह कुछ नहीं खाती-पीती वह पिता को बुलाकर रोने लगी। दो दिन से सुरीला को बुखार आया। दिन ब दिन बुखार बढता ही रहा।

डाक्टर को बुलवाया गया। सुरीला को दवा

दी लेकिन बेकार हो गया। अगले दिन उस माँ की इकलौती बेटी की हालत बुरी हो गयी। वह 'मेरे पिता'...'मेरे पिता' कहकर मर गयी।

दोनों दुखों से पीडित शहजा का दिल टूट गया। वह बगीचे में ही लेट गयी। शहजा इस दुनिया में अकेली हो गयी। वह मरना चाहती थी। अपनी बेटी की कब्रस्थान पर सिर रखकर रोते रोते शहजा का शरीर सूख गया।

शहजा के घर में अंधेरा छा गया। लोग शहजा को देखकर दुखी हुए। उन्होंने उसकी शुश्रूषा की। लेकिन दुखी शहजा जीना नहीं चाहती थी। ये दुख, बेचारा शहजा कैसे सहन करती! चार पाँच दिन तक वह रोती रोती उसी बगीचे में लेट गयी। दुख से वह पगली बन गयी।

अगले दिन लोगों ने देखा कि एक पगली गली से चलती है। वह कहती रहती थी—"मेरी बेटी सुरीला, तू कितना सुन्दर थी, मेरी बेटी,.....मेरी सुरीला".....

डूबते हुए सूरज के समान थोडे समय में से वह अदृश्य हो गयी। और लोगों के कानों में एक धीमी आवाज सुनायी पडी"—'मेरी सुरीला'....."

नारी

के. पी. मुहम्मद कुट्टि, II B.Sc.

"मोहन मुझे माफ कर दो। मुझे भूल जाओ। बीती गयी बातों को तुम्हारी स्मृति सीमा से बाहर कर दो। मैं तुम से शादी नहीं कर सकती। क्योंकि मुझे अपने माँ-बाप की आज्ञा का पालन करना है। कल मेरी शादी किसी एक डॉक्टर से होनेवाली है। हमें आशीर्वाद देने के लिए तुम को ज़रूर यहाँ आना चाहिए। मैं तुम्हारी राह देखती रहूँगी।

तुम्हारी बहन लीला।"

यह तार पढते ही मेरा दिल बैठ गया। क्या! यह भी सम्भव है? लीला, यह क्या है! तुम सचमुच मेरी प्रेमिका थी। तुम कहा करती थीं कि मेरे सिवा तुम जी नहीं सकती। वही तुम आज कहती हो कि 'तुम मुझे भूल जाओ।' जिसने मेरे ऊसर दिल में पहले पहल प्रेम की वर्षा करायी वही लीला आज कहतीं हैं कि मुझे उसे भूलना चाहिए। नहीं, यह मुझसे कभी नहीं होगा। तुम हमेशा मेरी याद में रहोगी। तुमने मेरे दिल में चोट पहूँचायी है। वह ऐसी चोट है जो कभी नहीं भरेगी। जब तक मेरा दिल है तब तक मैं तुम्हें याद करता रहूँगा—घृणा के साथ, वेदना के साथ। आगे मेरा जीवन दुख, पीडा और वेदना से परिपूर्ण होगा। ऐसा जीवन मुझे तुम्हारी याद दिलायेगा। हो! नारी, तुम कितनी निठुर हो!

तुम से मेरी पहली मुलाकात का चित्र आज भी मेरी आँखों के सामने घूमता है। वह तो दो साल पहले की घटना है। तो भी मैं उसे स्पष्ट रूप से देखता हूँ।

उस दिन सबेरे मैं उस तालाब में नहा रहा था। फौरन मैं ने एक नारी की आवाज़ सुनायी पडी "हायिरे मरी! बचाओ, मुझे बचाओ।" तुरंत मैं तालाब से निकल कर उस ओर दौडा जहाँ से वह आवाज़ निकलती थी। तब मैं ने क्या देखा! एक पागल कुत्ता एक लडकी के पीछे लगा था। वह लडकी कभी कभी सहायता के लिए पीछे देखती थी और चिल्लाती थी। मैं भी एक बडा पत्थर लेकर उनके पीछे लगा। जब मैं कुत्ते के करीब पहुँच गया तो मैं ने वह पत्थर उसके सिर पर फेंक दिया। पत्थर उसके सिर पर ठीक लगा कि कुत्ता तुरंत गिर पडा और चित्र हो गया साँस लिया। वह सुन्दर लडकी डर के कारण काँप रही थी। और उसके मुँह से कोई आवाज़ नहीं निकली। उसकी बडी बडी आसमानी, मीनाकृति और सजल आँखें डर के कारण और अधिक बडी हो गयीं थी। उसकी छाती ज़ोर से उमड रही थी।

आखिर मैं ने उस मौनभंजन करने का निश्चय किया। मैं ने कहा, "बेचारी! अब डरो मत। मैं ने उस पागल कुत्ते को मारा है। अब निश्शंक होकर घर जाओ। क्या मैं तुम्हारा नाम जान सकता हूँ।"

उस लडकी ने लज्जा के साथ धीमे स्वर में कहा, "लीला।" मैं सांत्वना देकर बोला कि लीला, तुम घर जाओ। यहाँ इस तरह खडे रहना अच्छा नहीं। तब वह सुन्दरी चलने लगी। मैं ज्यों ही त्यों उसकी ओर देखते खड़े रहता था। उसने बार बार सिर मोड कर पीछे देखा। मैं ने यह अपना सौभाग्य समझा कि मैं ऐसी एक सुन्दरी को एक पागल कुत्ते से बचा सका। लेकिन लीला, अब मैं जानता हूँ कि वह मेरे सर्व नाश की घटना थी।

उस दिन के बाद मैं रोज़ सबेरे तुम्हें उस तालाब के पास देखा करता था। तुम कोई-न-कोई बहाना बनाकर वहाँ आया करती थी। बाद में मैं ने समझा कि तुम सिर्फ मुझे देखने के लिए आया करती थी। हम सभी बातों पर बातचित किया

करते थे। क्रमशः हम दोनों प्रेम की अदृश्य रस्सी से बाँधे गये। तुम कहा करती थी, "मेरा मोहन, मैं तुमसे कभी अलग नहीं रह सकूँगी। यदि तुम नहीं, मैं भी नहीं तुम्हीं हो मेरी जान।" वही तुम आज कहती हो कि मुझे भूल जाओ, बीती बातों को दिल से निकाल दो कल एक डॉक्टर से तुम्हारी शादी होनेवाली है!

मैं ने सोचा था कि तुम्हारी मुहब्बत सच्चा हो, अकलंकित है। तुम एक अलौकिक सुन्दरी है। इसलिए मैं ने सोचा कि तुम्हारा प्रेम भी अलौकिक है। इसी कारण से मै ने अपने पिता से स्पष्ट रूप से कर दिया कि यदि मैं शादि करूँगा तो लीला से करूँगा। वे पहले मुझ से सहमत नहीं हुए। उनका जवाब था कि यद्यपि लीला एक धनी की बेटी है, तो भी उसकी जाति उतनी उँची नहीं। लेकिन आखिर उन्होने तुमसे शादी करने की अनुमति दी। तुम्हारे पिता भी विमुख न थे। लेकिन उन्होंने कहा कि शादी के पहले तुम्हें कोई सरकारी नौकरी पानी चाहिए। उनकी आशा की पुर्त्ति के लिए मैं दिन रात एक सरकारी नौकरी के पीछे दौडने लगा।

मैं योग्यता पत्र लेकर जगह-जगह घूमने लगा। मैं इस आशा के साथ सभी दरवाज़ों को खटखटाया। लेकिन सभी जगहों से मैं केवल यही सुन सका—"नो वेकन्सी।" किसी ने मुझ से कहा कि यदि मैं कोई कौकरी पाना चाहता हूँ तो पैसे और शिफारिश की जरूरत है। शिफारिश तो कोई बडी बात नहीं। लेकिन पैसे कहाँ से मिलेंगे? किसी अफसर ने कहा "एक हज़ार रुपये दो तो एक अच्छी नौकरी दिला सकता हूँ"। सब जगह मैं ने नौकरी का सौदा देखा। अखिर मैं निराशा का शिकार बन गया। पैसा देने के अलावा कोई चारा दिखाई नहीं पडा। मेरे पिता के पास, व्यापार में घाटा होने के कारण पैसा नहीं था। इसलिए उनको हमारा खेत पाँच सौ रुपयें को बेचना पडा। उन पाँच सौ रुपयों के बलपर मुझे एक डाक्-घर में एक क्लर्क की नौकरी मिली—पच्चास मील दूर पर। मैं एक कुत्ते की तरह दिन-रात एक तरह एक नौकरी की तलाश में घूमा। हमारा एक-मात्र खेत हम ने बेच डाला। ये सब किसके लिए सिर्फ लीला, तुम्हारे लिए, तुम्हें मेरे घर लाने के लिए। लेकिन अखिर तुमने क्या किया? मेरी सभी आशाओं को मिट्टी में मिला दिया। हो! यह कैसी वेदना है!

बिना विलंब के मैं यहाँ क्लर्क का काम करने के लिए आया। यहाँ आने के पहले मैं ने तुमसे कहा कि मैं जल्दी वापस आकर शादी का प्रबन्ध करूँगाँ। तुमने भरी हुई आवाज़ में कहा था कि मैं प्रतीक्षा में रहूंगी। लेकिन जब मैं यहाँ आया तो मालूम हो गया कि मुझे सात महीने के बाद ही छुट्टी मिलेगी। सात महीने! धीरे-धीरे एक एक करके पाँच महीने बीत गये। कभी-कभी मुझे तुम्हारी खत मिलते थे। लेकिन पाँचवें महीने में मुझे तुम्हारा एक कार्ड भी नहीं मिला। मैं ने तुम्हें लिखा, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। तुम को क्या हो गया—मेरा मन विह्वल हो गया। मेरे दिमाग में चिंता की लहरें उमड रहीं थीं। मैं अशान्त मन से दिन काटने लगा।

उस हालत में मुझे तुम्हारा वह तार मिला। तुम्हारे निमन्त्रण का तार! तुमने लिखा है कि मुझे तुम दोनों को आशीर्वाद देने के लिए वहाँ जाना चाहिए!! नहीं। मैं कभी नहीं जाऊँगा। मैं तुम्हें आशीर्वाद नहीं दूंगा कि.....। लेकिन नहीं। मैं शाप नहीं दूंगा, आशीर्वाद भी नहीं दूंगा। लेकिन लीला, तुम याद रखो कि तुम ने अपनी करतूत से मुझे दुख के सागर में धकेल दिया है। तुम्हें परमात्मा माफ कभी नहीं देगा। जब तुमने एक डॉक्टर को देखा तो इस बेचारे क्लर्क को भूल गयी। तुम मुझे भूल सकती हो। लेकिन मैं तुम्हारा यह काम कभी नहीं भूलूँगा मैं निराशा रूपी कुए में गिर कर, मृत्यु का शिकार बनकर, मिट्टी में मिल जाऊँगा। तुम्हारी स्मृति से मैं हमेशा के लिए अलग जाऊँगा। लेकिन याद रखो जिस मिट्टी में मेरा यह शरीर मिल जायेगा, उसी मिट्टी का हर एक कण तुम्हारी इस वंचना की कहानी सुनायेगा। तुम ने मुझे सिखाया कि नारी प्रेम का घर है। आज वही तुम मुझे सिखाती है कि नारी विश्वासपात्र नहीं। वह पैसे की आवाज़ सुनती है, लेकिन एक दिल का रुदन सुन नहीं सकती।

पश्चात्ताप

विदुषी एम. तंकम्मा मालिक, "हिन्दी सरस्वती"

"हाय माँ ! सहा नहीं जाता, हे भगवन, कब तक यह जलन सहता रहूँ ? हाँ, जलने दो मुझे और, मैं पापी हूँ, घमंडी था, अज्ञ था। सुख भोग की चिन्ता ने, विज्ञता के गर्व ने मुझे अन्धा बना दिया था। मैं ने किस को क्या सुख पहुँचाया ? डाक्टरी जो सीखी परोपकार के लिये या धनोपार्जन के लिये अथवा सुखी जीवन बिताने ? मैं ने बहुत अधिक सुख लूटा, पर आज ? वे सब मित्र और प्रेयसियाँ कहाँ चली गयीं ? रात दिन, हर हफ्ते, हर माम सुन्दर सुन्दर कुमारियों को कुछ मरीजों के तौर पर आती थीं तो कुछ आज्ञाकारिणी नर्सें थीं—आलिंगन पाश में जकडने का, क्षणिक सुख में स्वर्गानुभूति का मजा लूटने का अवसर मुझे सदा मिलता रहता था। पर कभी सपने में भी यह न सोचा था कि एक दिन मुझ डाक्टर को भी बीमार होना पड़ेगा।

हाय माँ, मेरी माँ, तू बचपन में ही मुझे छोड क्यों चली ? नहीं तो आज तेरी गोद में मैं आश्वासन पा लेता !—क्या कहा रे पागल ? माँ की गोद में आश्वासन पा लेते ? नहीं नहीं, वह होती तो उसे भी रुला रुला कर तुम मार डालते ! देखो पीछे फिर कर। उस बेचारी से तुम ने क्या किया था ? कैसा कैसा वादा करके तुमने उस की छाती में छुरा भोंका था ? असली छुरा होता तो कितना अच्छा होता ! हाय ! जरा सोचा तो, तुमने उसे कैसे बदनाम कर लिया ! कितने घडों आँसू पिलाये ? उस ने तुम्हारा क्या बिगाडा था ? सच्चा प्यार दिया, बच्चे की तरह वात्सल्य प्रदान किया, गोद में सुलाया, खिलाया, पिलाया, सेवा शुश्रूषा की, इसी का बदला था वह आँसू ? वह बदनामी ! यह दुरंगी चाल उस से तुमने क्यों चलाई ? अपने सुख केलिये या भीरू प्रकृति के कारण ? बोलो, दूसरों के जाल में फँसकर अथवा अपनी कमजोरी छिपाने केलिये ? कुछ भी हो, बडा अन्याय हुआ, भोगा अब उसी का फल।

तीन साल पहले, वह कितनी हँस मुँह थी, वत्सला थी, रोगियों को कितने प्रेम और लगन से संभालती थी। किसी भी रोगी को दी दी माँ के संबन्ध में कोई भी शिकायत न थी। सब कोई अपनी सेवा केलिये उसी को चाहते थे; यह देख कर अन्य नर्स बहनें उस से मन ही मन कुढ़ती थी।

एक नया नया आया डाक्टर, लोक परिचय एवं चिकित्सा परिचय का अभाव लेकर। पर उस सफ़ेद पोशाकवाली बडी नर्स ने उसे बहुत जल्दी लायक बना दिया। छुट्टी मिलने पर दोनों बैठकर बातें किया करते, ताश या टेनीस खेलते अथवा साहित्य चर्चा चलाते। उस दुखिनी विधवा में एक नया जीवन सा सब ने पाया। राजस्तान से आई हुई उस नर्स के बारे में किसी को भी ज्यादा कुछ मालूम न था। डाक्टर तो पंजाबी था।

एक दिन डाक्टर को बुखार चढ़ा था। शाम की ड्यूटी खतम होने पर नर्स सीधे डाक्टर के कमरे में आयी। वह पडा पडा कराह रहा था—"हाय माँ, मेरी माँ !!" नर्स ने बत्ती जलाई। कुछ दवा पिलाई, बाद स्टोव जलाकर चाय तैयार की। डाक्टर बच्चे के समान जिद् करने लगा "न को, मुझे चाय नहीं चाहिये" नर्स उस के पास बैठकर बोली "समझो, तुम्हारी माँ ही चाय पिला रही है, सेवा कर रही है। हठ छोडकर गरम गरम चाय पियो लाल, भीतर की गरमी पसीना होकर निकलेगी" डाक्टर ने उस के प्रशान्त एवं स्नेह स्निग्ध चेहरे की ओर थोडी देर ध्यान से देखा, एकाएक मतवाला बनकर यह कहते हुए उस से लिपट गया "मेरी माँ, मेरी अच्छी माँ, मैं जिद् न करूँगा। तुम्हें खोऊँगा भी नहीं।

मेरी खोई हुई माँ मुझे मिल गयी है, अब कभी अलग न होने दूँगा" उसका गला भर आया, आँखें डबा डबा आयीं। नर्स उसके बालों पर हाथ फेरती रही, और रोती रही। धीरे से वह बोली "क्या यह सच है? इतना सुख मुझे मिलेगा? मैं हतभागिनी हूँ, चिरदुखिनी हूँ भैया। मैं कभी तुम्हें बिगाड़ूँगी नहीं, बिगडने दूँगी भी नहीं। पर याद रखना आज से तुम पर मेरा ही हक है, तुमने मुझे माँ बना लिया है, समझो?" "मान लिया माँ, मान लिया, आज मुझे कैसा सुख है, मैं हमेशा बीमार रहना चाहता हूँ, जिससे तुम्हारी गोद का सुख मिले।" नर्स ने बच्चे की तरह थपकी मार मार कर उसे सुलाया तब उठकर अपने क्वार्टर्स चली गयी।

डाक्टर बड बडाने लगा "सब ठीक है माँ, दूसरे दिन तुम्हारे मुँहपर कैसी परितृप्ति थी, संतोष था। एक नयी स्फूर्ति, नयी चेतना मुझ में भी आ गयी थी। पर एक महीने बाद? तुम एक इम्तहान लिखने लखनऊ गयी हुई थी। एक एक दिन मुझे पहाड जैसा प्रतीत होता था—पर कुछ दिन बाद सारा खेल चौपट हो गया। नयी नर्सिंग स्कूल खोली गयी। कुल चालीस लडकियाँ थी पहली बेच में। मैं उन में कुछ लडकियों पर अधिक ध्यान लेने लगा। इन दिनों अस्पताल का वह पुराना कांपौन्डर न जाने कैसे, मुझ पर जादू, डालने लगा। तुम्हारे विरुद्ध वह सदा मेरे कान भरने लगा। कैसी कैसी भद्दी भद्दी कहानियाँ गढ़ गढ कर उसने मुझे सुनाई। मैंने आंगा पीछा न सोचकर उन बातों का विश्वास किया। तुम आ गयी तो मैं तुम से दूर दूर रहने लगा। कांपौन्डर हमारे बीच खाई खोद ने तैयार तो रहते ही थे। नई लडकियों से खुल्लम-खुल्ला हँसने बोलने में तुम्हारी उपस्थिति में मुझे कुछ घबराहट होती थी, अत, तुम्हें रास्ते से हटाने केलिये कांपाऊंडर से मिलकर मैं ने तुम्हारे ऊपर कीचड फेंकनी शुरू कर दी। उस के द्वारा मैं ने अफवाह फैला दी कि तुम मुझ से अनुचित संबन्ध जोडना चाहती हो नर्सों के बीच में काना फूसी चलने लगीं जो सब के सब मेरे प्रेम की भूखी थीं। तुम एकदम घबरा गयी। एक दिन मेरे कमरे में आकर पूछ ने लगी "किस जन्म का वैर चुका रहे हो भैया? तुम जानबूझ कर मुझे बदनाम क्यों कर रहे हो? मैं ने तुम्हारा क्या बिगाडा?" मैं ने कठोर स्वर में उल्टी शिकायत सुनाई "मैं जान गया सब। तुम मेरे और उन लडकियों के बारे में अस्पताल भर में क्या क्या कहती फिरती हो। जो कुछ चाहे कहो, मुझे परवाह नहीं। आज से मैं तुम से बोलना नहीं चाहता, चली जाओ"

हाय बेचारी माँ, तुम चली गयी रोनी सूरत बनाकर, पर मैं मन ही मन अपनी विजय पर प्रसन्न था। कांपाऊन्डर ने आकर वाहवाही दी, अब वही मेरा विश्वास पात्र उपदेशक था।

तब से मैं तुम से न बोलता था। मेरी मदद केलिये तुम्हारे सामने ही अन्य नर्सों को बुला लेता और लडकियों से हास परिहास करता था। तीन मास बाद तुम छुट्टी पर गयी तो फिर वापस न आयी। मैं ने सोचा अच्छा हुआ बला टल गयी।

पर माँ एक साल बाद मुझ पर क्या बीता, सो तुम न जानती। उसी कांपाऊँन्डर ने मुझे बदनाम कर डाला। स्वयं डाक्टर बन कर चिकित्सा भी शुरू कर दी। जब पकडा गया तो सारा दोष मुझ पर डालकर बाल बाल बच गया। तब मेरी आँखें खुल गयीं माँ। मैं ने तुम्हें बहुत सताया। मैं ने जो पाप किया, उसी का फल अब भोग रहा हूँ। तुम्हारे आँसुओं का मूल्य अपने आँसुओं से चुका रहा हूँ। हाय यह कैसी जलन है? कैसी बीमारी है? माँ, तुम कहाँ हो? मुझे माफ़ कर दो। आ जाओ, फिर एक बार उस गोद में लिटाकर सुलाओ। अब कभी मैं तुम्हें सताऊँगा नहीं, रुलाऊँगा नहीं। तुम मोहबत की प्यासी थी, सच्ची मुहब्बत मैं दूँगा माँ। दुनिया से मैं ने अब बहुत कुछ सीख लिया है। पश्चाताप की आग आज मुझे जला रही है। आओ माँ मेरी, अपने बेटे से माफ करो।"